* ओ३म् *

पुराणपरिचय

पं० कालूराम कृत पुराणकलंका भासमार्जनका

उत्तर

लेखक और प्रकाशक

पं० छुट्टनलाल स्वामी

स्वामी प्रेस मेरठ शहर

अप्रैल १९१७

प्रथमवार २०० मूल्य ।)

* विशेष सूचना *

वेद प्रकाश से अलग करके छपाने में असावधानी से इस पुस्तक के पृष्ठ के अङ्क अशुद्ध छपगये हैं पाठक ठीक करलें पृष्ठ ८ से आगे । ५ । ६ । ७ । ८ पुनः छपगये ठीक करलें आगे भी पृष्ठों में कमी या अधिकता हैं ॥

छुट्टनलाल स्वामी

सम्पादक वेदप्रकाश मेरठ

पुराण परिचय

"पुराणकलङ्काभासमार्जन" का उत्तर

कुछ दिन से पं० कालूराम जी ने पुराण ग्रन्थों की वकालत आरम्भ की है। उन्होंने पुराणों के दोषों की सफ़ाई भी देने का यत्न किया है साथ ही वह आर्यसमाज पर भी मिथ्याकटाक्ष करते हैं। हमारे पूज्य पं० तुलसीराम जी स्वामी पर भी छींटे मारे हैं। हम अन्य बातों पर पीछे लिखेंगे। आज "सनातनधर्म" नाम से पुकारे पुराणधर्म का नमूना दिखाते हैं। आशा है कि पं० कालूराम जी और ब्राह्मणसर्वस्व के प्रकाशक महोदय ध्यान से पढ़ कर पुराणधर्म और वैदिकधर्म के मर्म को समझेंगे॥

दयानन्दीयपन्थ में निस्सन्देह ऐसी निर्लज्जता नहीं जैसी कि पुराणों के परदादा महाभारत में लिखी है। महाभारत आदि पर्व अध्याय १२० में पाण्डु अपनी स्त्री कुन्ती से कहते हैं कि-

उत्तमाद्देवरात्पुंसः काङ्क्षन्ते पुत्रमापदि॥३४॥ अपत्यं धर्मफलदं श्रेष्ठं विन्दन्ति मानवाः। आत्मशुक्रादपि पृथे! मनुः स्वायंभुवोऽब्रवीत्॥३५॥तस्मात् प्रहेष्याम्यद्य त्वां हीनः प्रजननात्स्वयम्।सदृशाच्छ्रेयसोवा त्वं विद्ध्यपत्यं यशस्विनम्॥३६ शृणु कुन्ति! कथामेतां शारदण्डायनीं प्रति। सा वीरपत्नी गुरुणा नियुक्ता पुत्रजन्मनि॥ ३७॥ पुष्पेण प्रयता स्नाता निशि कुन्ति! चतुष्पथे। वरयित्वा द्विजं सिद्धं हुत्वा पुंसवनेऽनलम्॥ ३८॥ कर्मण्यवसिते तस्मिन्सा तेनैव सहाऽवसत्। तत्र त्रीन् जनयामास दुर्जयादीन्महारथान्॥ ३९॥ तथा त्वमपि कल्याणि! ब्राह्मणात्तापसाधिकात्। मन्नियोगाद्यत क्षिप्रमपत्योत्पादनं प्रति॥ ४०॥

(अर्थ) हे कुन्ती! देवर (द्वितीय वर) जो उत्तम हो उस से आपत्काल में लोग सन्तान की कामना करते हैं॥ ३४॥ और व्यभिचार नहीं; किन्तु

धर्म फलदायक उत्तम सन्तान को प्राप्त होते हैं। यह स्वायम्भुव मनुने कहा है ॥३५॥ इस कारण हे कुन्ति! अब मैं तुझे आज्ञा दूंगा कि अपने सदृश वा उच्च पुरुष से सन्तान उत्पन्न कर; क्योंकि मैं स्वयं सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ हूं ॥ ३६ ॥ हे कुन्ति! शारदण्डायनी की कथा सुन। उस वीरपत्नी ने पुत्र-जन्मनिमित्त उच्च से (नियुक्ता) नियोग किया था ॥ ३७ ॥ जब वह पुष्पवती होकर स्नान करके निमटी तब रात्रि को चतुष्पथ में एक सिद्ध द्विज को वर करके पुंसवन अर्थात् पुरुष पुत्र को उत्पन्न करने निमत्त अग्नि में होम किया ॥ ३८ ॥ गर्भाधानसंस्कार निमटने पर वह वीरपत्नी उस द्विजसे समागम को प्राप्त हुई, उस से दुर्जय आदि ३ महारथ उत्पन्न हुवे ॥ ३९ ॥ इसी प्रकार हे कुन्ति! तू भी किसी तपमें अधिक ब्राह्मण से मेरी आज्ञानुसार सन्तानोत्पत्ति का यत्न कर ॥ ४० ॥ फिर—आदि पर्व अ० १९८ में—

अधर्मोऽयं मम मतो विरुद्धो लोकवेदयोः। नह्येका विद्यते पत्नी बहूनां द्विजसत्तम! ॥ ७ ॥ युधिष्ठिर उवाच— न मे वागनृतं प्राह नाऽधर्मे धीयते मतिः। वर्त्तते हि मनो मेऽत्र नैषोऽधर्मः कथञ्चन ॥ १३ ॥ श्रूयते हि पुराणेपि जटिला नाम गौतमी। ऋषीनध्यासितवती सप्त धर्मभृतां वरा ॥१४॥ तथैव मुनिजा वार्क्षी तपोभिर्भावितात्मनः। सङ्गताऽभूद्दश भ्रातॄनेकनाम्नः प्रचेतसः ॥ १५ ॥ गुरोर्हि वचनं प्राहुर्धर्म्यं धर्मज्ञसत्तम!। गुरूणां चैव सर्वेषां माता परमको गुरुः ॥१६॥ सा चाप्युक्तवती वाचं भैक्ष्यवद्भुज्यतामिति। तस्मादेतमहं मन्ये परं धर्मं द्विजोत्तम! ॥ १७ ॥ कुन्त्युवाच—एवमेतद्यथा प्राह धर्मचारी युधिष्ठिरः। अनृतान्मे भयं तीव्रं मुच्येऽहमनृतात्कथम् १८ व्यासउवाच—अनृतान्मोक्ष्यसे भद्रे! "धर्मश्चैव सनातनः"। यथा च प्राह कौन्तेयस्तथा धर्मो न संशयः॥२१॥

अर्थ—एक साथ एक स्त्री के अनेक पतियों का होना मेरी बुद्धि में लोक और वेद से विरुद्ध और अधर्म है क्योंकि हे द्विजोत्तम! बहुतसे पुरुषोंकी एक

स्त्री नहीं हो सकती ॥७॥ इस द्रुपद की बात को सुनकर धर्म्मराज सत्यवादी महाराज युधिष्ठिर बोले कि हे राजा द्रुपद ! मेरी वाणी असत्य को कभी नहीं कहती और न मेरी बुद्धि अधर्म में प्रवृत्त होती है किन्तु मेरा मन इस काम में प्रवृत्त है इस लिये इस कार्य (एक स्त्री को अनेक पति करने) में किसी प्रकार अधर्म्म नहीं है ॥ १३ ॥

क्योंकि पुराणों में सुनते हैं कि जटिला नामक गौतम ऋषि की लड़की ने सप्त ऋषियों के साथ सहवास किया अर्थात् एक साथ सात पति किये॥१४॥

ऐसे ही मुनिजा वार्क्षी नाम्नी ने प्रचेतस् नाम के दश तपस्वी भाइयों से गमन किया ॥ १५ ॥ धर्मज्ञ लोग गुरु के वचन को धर्म्मयुक्त कहते हैं और सब गुरुओं में माता रूप गुरु ही श्रेष्ठ है ॥१६॥ वह माता हम को कह चुकी है कि भिक्षा के समान सब जने इस [द्रौपदी] को भोगो, इसलिये मैं इस को परमधर्म्म मानता हूं ॥ १७ ॥

कुन्ती बोली कि धर्म्मात्मा युधिष्ठिर ने जैसा कहा है वैसा ही ठीक है, असत्य से मुझे बहुत ही भय है, मैं असत्य से कैसे छूट सकूंगी ॥१८॥ तब वेदव्यासजी बोले कि हे कुन्ती! तुम असत्य से छूटोगी, यह सनातनधर्म है, मैं राजा द्रुपद से कहता हूं, वह मेरे वचन को सुने ॥१९॥ जो कुछ राजा युधिष्ठिर ने कथन किया है वह "सनातन धर्म है" इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥२०॥

अब सनातनधर्मसभा के सभासदों को उचित है कि नियोग का खण्डन कभी न करें क्योंकि महाभारत में एक स्त्री को एक साथ अनेक ख़सम (पति) करने का नामही "सनातनधर्म्म" लिखा है केवल एक स्त्री को अनेक पति करने का नामही सनातनधर्म नहीं है किन्तु व्यभिचार करने को भी सनातनधर्म्म लिखा है । देखो आदि पर्व अ० १२२—पाण्डुरुवाच—

अथ त्विदं प्रवक्ष्यामि धर्म्मतत्त्वन्निबोध मे । पुराणमृषिभिर्दृष्टं धर्म्मविद्भिर्महात्मभिः ॥३॥ अनावृत्ताः किल पुरा स्त्रिय आसन्वरानने! कामचारविहारिण्यः स्वतन्त्राश्चारुहासिनि! तासां व्युच्चरमाणानां कौमारात्सुभगे! पतीन् । नाधर्म्मोऽभूद्वरारोहे! स हि धर्म्मः पुराऽभवत् ॥५॥ तञ्चैव धर्म्मं पौराणं तिर्यग्योनिगताः प्रजाः । अद्याप्यनुविधीयन्ते कामक्रोधवि-

वर्जिताः ॥६॥ प्रमाणदृष्टो धर्म्मोऽयं पूज्यते च महर्षिभिः । उत्तरेषु च रम्भोरु! कुरुष्वद्यापि पूज्यते॥७॥ स्त्रीणामनुग्रहकरः स हि "धर्म्मः सनातनः" । अस्मिंस्तु लोके न चिरान्मर्यादेयं शुचिस्मिते! । स्थापिता येन यस्माच्च तन्मे विस्तरतःशृणु॥८॥

महाराज पाण्डु अपनी स्त्री कुन्ती से कहते हैं कि धर्मात्मा विद्वान् ऋषियों ने जिस पुराण धर्म को देखा उस सनातन पुराण धर्मको मैं कहता हूं,उस धर्म्म को मुझ से जान ॥३॥ हे सुन्दर हास्य वाली कुन्ती ! पूर्वकाल में सब स्त्रियां स्वतन्त्र थीं अर्थात् जैसे वर्तमान समय में स्त्री पतिके आधीन हैं ऐसे पूर्वकाल में स्त्री किसी पुरुष के बन्धन (क़ैद) में नहीं थीं किन्तु स्वेच्छाचारिणी थीं ॥४॥ कुआरेपन(कन्यावस्था) से ही पतियों को उल्लङ्घन करके स्वतन्त्रतापूर्वक विहार करने पर,भी उन स्त्रियों को पाप नहीं लगा क्योंकि वह पहिले धर्म्म था ॥ ५ ॥ उस "पुराण धर्म्म" को काम क्रोध से रहित पशु पक्षी आदि प्राणी अद्यापि पाल रहे हैं॥६॥ इस प्रामाणिक धर्म्म का महर्षि लोग पूजा (सत्कार) करते हैं। उत्तर कुरु में अब भी इस धर्मकी पूजा हो रही है ॥७॥ स्त्रियों पर अनुग्रह (मेहर्बानी) करने वाला "यही सनातनधर्म्म"है । इस लोकमें बहुत दिन से यह मर्यादा स्थापित नहीं हुई है,यह मर्यादा जिस पुरुष से और जिस कारणसे स्थापित हुई है वह मेरे से तू विस्तारपूर्वक श्रवण कर ॥ ८ ॥

बभूवोद्दालको नाम महर्षिरिति नः श्रुतम् । श्वेतकेतुरिति ख्यातः पुत्रस्तस्याऽभवन्मुनिः ॥९॥ मर्यादेयं कृता तेन धर्म्या वै श्वेतकेतुना।कोपात्कमलपत्राक्षि!यदर्थस्तन्निबोध मे॥१०॥ श्वेतकेतोः किल पुरा समक्षं मातरं पितुः । जग्राह ब्राह्मणः पाणौ गच्छाव इति चाऽब्रवीत् ॥११॥ ऋषिपुत्रस्ततः कोपं चकाराऽमर्षचोदितः । मातरं तां तथा दृष्ट्वा नीयमानां बलादिव ॥१२॥ क्रुद्धन्तन्तु पिता दृष्ट्वा श्वेतकेतुमुवाच ह । मा तात ! कोपं कार्षीस्त्वमेष"धर्म्मः सनातनः" ॥१३॥अनावृत्ता

हि सर्वेषां वर्णानामङ्गना भुवि। यथा गावः स्थितास्तात स्वे स्वे वर्णे तथा प्रजाः ॥ १४ ॥ पत्या नियुक्ता या चैव पत्नी पुत्रार्थमेव च। न करिष्यति तस्याश्च भविष्यति तदेव हि ॥१९॥ सौदासेन च रम्भोरु नियुक्ता पुत्रजन्मनि। दमयन्ती जगामर्षिं वसिष्ठमिति नः श्रुतम् ॥२१॥ तस्माल्लेभे च सा पुत्रमश्मकं नाम भामिनी ॥ २२ ॥ अस्माकमपि ते जन्म विदितं कमलेक्षणे! । कृष्णद्वैपायनाद्भीरो! कुरुणां वंशवृद्धये ॥२३॥ अत एतानि सर्वाणि कारणानि समीक्ष्य वै। ममैतद्वचनं धर्म्यं कर्त्तुमर्हस्यऽनिन्दिते! ॥ २४ ॥ ऋतावृतौ राजपुत्रि! स्त्रिया भर्त्ता पतिव्रते! । नातिवर्त्तव्य इत्येवं धर्मं धर्मविदो विदुः ॥ २५ ॥ शेषेष्वन्येषु कालेषु स्वातन्त्र्यं स्त्री किलार्हति। धर्ममेवं जनाः सन्तः पुराणं परिचक्षते ।२६। भा० आ० प० अ० १२२ ॥ तृ० सं० शाक १८०९

हम ने सुना है कि उद्दालक नाम एक ऋषि हुवे। उनका पुत्र श्वेतकेतु नामक मुनि हुआ ॥९॥

उस श्वेतकेतु ने कोप से यह धर्ममर्यादा स्थापित की। उस श्वेतकेतु को मुझ से तू सुन ॥ १० ॥

श्वेतकेतु और उस के पिता उद्दालक के सम्मुख एक ब्राह्मण श्वेतकेतु की माता का हाथ पकड़ कर बोला कि हम दोनों गमन करें ॥ ११ ॥

ऐसे बलात्कार (ज़बरदस्ती) से माता को प्राप्त करते (लेजाते) देख कर क्रोध (गुस्से) में आकर पुत्रने कोप किया ॥ १२ ॥ श्वेतकेतु को गुस्से में (क्रोधाविष्ट) देखकर महर्षि उद्दालक जी बोले कि हे तात! क्रोध मत कर क्योंकि यह सनातन* धर्म है ॥१३॥ हे पुत्र! जैसे गाय बैल आदि सब स्वतन्त्र हैं ऐसे ही पृथिवी पर सब वर्णों की स्त्रियें भी स्वतन्त्र हैं अर्थात् किसी से घिरी हुई वा बन्धन में नहीं हैं ॥१४॥ पति की आज्ञा पाकर जो

* वाह रे सनातन धर्म ! ! !

स्त्री नियोग करके पुत्रोत्पत्ति नहीं करेगी उस स्त्री को भ्रूणहत्या का पाप लगेगा ॥१९॥ हम ने सुना है कि राजा सौदास ने दमयन्ती का वशिष्ठ ऋषि से नियोग कराया और दमयन्ती ने वसिष्ठ ऋषि से गमन किया और वसिष्ठ ऋषि से दमयन्ती के अश्मक नामक पुत्र उत्पन्न हुआ ॥२२॥ और कुरुकुल की वृद्धि के लिये वेदव्यास जी से हमारा जन्म हुआ है इसको भी तू जानती है ॥२३॥ इन सब कारणों को विचार के मेरे धर्मयुक्त वचनानुसार तू पुत्रोत्पत्ति के लिये नियोग कर ॥ २४ ॥ हे पतिव्रते ! राजपुत्री ! धर्म के जानने वाले इसी को धर्म कहते हैं कि प्रत्येक ऋतुकाल में स्त्री अपने पति को छोड़कर परपति के पास न जाय परन्तु ऋतुकाल को छोड़ कर अन्य कालों में स्त्रियों को स्वतन्त्रता है सन्त लोग इसी को पुराण (सनातन) * धर्म कहते हैं ॥ २५ । २६ ॥

महाभारत आदि पर्व अध्याय १७९ में कथा है कि कल्माषपाद अयोध्या के राजा ने वसिष्ठ ऋषि से कहा कि—

इक्ष्वाकूणां च येनाऽहमनृणः स्यां द्विजोत्तम ? ।
तत्त्वत्तः प्राप्तुमिच्छामि सर्ववेदविदांवर ! ॥ ३३ ॥
अपत्यमीप्सितं मह्यं दातुमर्हसि सत्तम ! ।
शीलरूपगुणोपेतमिक्ष्वाकुकुलवृद्धये ॥ ३४ ॥

अर्थ—जिस से इक्ष्वाकुओं के पितृऋण से अऋणहोऊं, वह (पुत्र) तुम से प्राप्त करना चाहता हूं। हे द्विजोत्तम ! हे सब वेदवेत्ताओं में श्रेष्ठ ! ॥३३॥ हे सज्जन शिरोमणे ! मुझे मन चाही सन्तान दीजिये जो शील रूप और गुण से युक्त हो और जिस से इक्ष्वाकुकुल की वृद्धि हो ॥ ३४ ॥ इस में वसिष्ठ जी को वेदवेत्ता इस लिये कहा है कि आप वेदोक्त नियोग धर्म को जानते हैं। हमारे पं० जी यह न कह उठें कि वसिष्ठ जी के वरदान मात्र से राजा के पुत्र होगया। नहीं २ उसी अध्याय में लिखा है कि राजा वसिष्ठजी को अपने घर अयोध्या ले आया ॥

ततः प्रतिययौ काले वसिष्ठः सह तेन वै ।
ख्यातां पुरीमिमां लोकेष्वयोध्यां मनुजेश्वर ॥ ३६॥

* इस श्लोक में व्यभिचार को ही सनातनधर्म माना है ॥

अर्थ - वसिष्ठ जी राजा के साथ "समय" पर जगद्विख्यात अयोध्यापुरी में पहुंचे। फिर—

राज्ञस्तस्याज्ञया देवी वसिष्ठमुपचक्रमे ॥ ४३ ॥

अर्थ—उस राजा की आज्ञा से रानी जी वसिष्ठ की सेवा में उपस्थित हुई। फिर—

महर्षिः संविदं कृत्वा सम्बभूव तया सह ।

देव्या दिव्येन विधिना वसिष्ठः श्रेष्ठभागृषि ॥ ४४ ॥

अर्थ—उस देवी के साथ दिव्य (उत्तम) विधि से श्रेष्ठभागी महर्षि वसिष्ठ समागम को प्राप्त भये। फिर—

ततस्तस्यां समुत्पन्ने गर्भे स मुनिपुङ्गवः ।

राज्ञाभिवादितस्तेन जगाम मुनिराश्रमम् ॥ ४५ ॥

अर्थ—तब उन से उस रानी में गर्भ स्थित होने पर वसिष्ठ जी उस राजा से नमस्कृत अपने आश्रम को चले गये ॥

अब तो "अन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत्" को वसिष्ठ महर्षि के दृष्टान्त से आप भी मानेंगे? इतने पर भी पुराण ही लज्जा के रक्षक समझे जावें तो उतथ्य की कथा महाभारत आदि पर्व अध्याय १०४ में देखिये—

अथोतथ्य इतिख्यातः आसीद्धीमानृषिः पुरा । ममता नाम तस्यासीद्भार्या परमसम्मता ॥ ८ ॥ उतथ्यस्य यवीयांस्तु पुरोधास्त्रिदिवौकसाम् । बृहस्पतिर्बृहत्तेजा ममतामन्वपद्यत ॥ ९ ॥ उवाच ममता तन्तु देवरं वदतांवरम् । अन्तर्वत्नी त्वहं भ्रात्रा ज्येष्ठेनारम्यतामिति ॥ १० ॥ अयं च मे महाभाग ! कुक्षावेव बृहस्पते । । औतथ्यो वेदमत्रापि षडङ्गं प्रत्यधीयत ॥११॥ अमोघरेतास्त्वं चाऽपि द्वयोर्नास्त्यत्र संभवः । तस्मादेवं च न त्वद्य उपारमितुमर्हसि ॥१२॥ एवमुक्तस्तया सम्यग्बृहस्पतिरुदारधीः । कामात्मानं तथात्मानं न शशाक नियच्छितुम् ॥ १३ ॥ संबभूव ततः कामी तया सार्धमकामया । उत्सृजन्तं तु तं रेतः सगर्भस्थोऽभ्यभाषत

॥१४॥ भोस्तात ! मा गमः कामं द्वयोर्नास्तीह संभवः। अल्पावकाशोभगवन् ! पूर्वं चाहमिहागतः ॥ १५ ॥ अमोघरेताश्च भवान्न पीडां कर्त्तुमर्हति। अश्रुत्वैव तु तद्वाक्यं गर्भस्थस्य बृहस्पतिः ॥१६॥ जगाम मैथुनायैव ममतां चारुलोचनाम् । शुक्रोत्सर्गं ततो बुद्ध्वा तस्या गर्भगतोमुनिः । पद्भ्यामरोधयन्मार्गं शुक्रस्य च बृहस्पते ॥ १७ ॥

अर्थात् प्राचीन कालमें एक उतथ्य नाम ऋषि होता भया, ममता नाम्नी बड़ी अच्छी उसकी स्त्री थी ॥८॥ उतथ्य का छोटा भाई देवतों का पुरोहित महातेजस्वी बृहस्पति ममता के पास गया ॥९ ॥ उस बड़े मधुरभाषी देवर से ममता बोली कि मैं तो आपके बड़े भाई से गर्भवती हूं, इस लिये आप रहने दीजिये ॥ १० ॥ और हे बड़भागी ! यह उतथ्य का पुत्र मेरी कोख में है । हे बृहस्पते ! इसने यहां भी छः अङ्ग वाला वेद पढ़ा है ॥ ११ ॥ और आप का वीर्य भी व्यर्थ नहीं जा सकता और यहां दो की गुञ्जाइश नहीं इस लिये आज तो मेरे पास आना योग्य नहीं ॥१२॥ इस प्रकार उस बड़ी बुद्धि वाले बृहस्पति से उस (ममता) ने कहा भी परन्तु वह अपने कामको न रोक सका ॥१३॥ निदान वह कामी उस कामरहित के थिर हुआ और जब मैथुन करनेलगा तो वह गर्भस्थ बोला कि ॥१४॥ चचा ! कामके वशीभूत न हूजिये । यहां दो की गुञ्जाइश नहीं है, जगह थोड़ी है और मैं पहले आपहुंचा हूं ॥१५॥ और आप का शुक्र भी वृथा नहीं जासकता। इस लिये तकलीफ़ न दीजिये। परन्तु बृहस्पति ने उस गर्भस्थ की एक न सुनी ॥१६॥ और उस से मैथुन के लिये पहुंच ही गया । क्योंकि उस की आंखें बड़ी अच्छीं थीं । जब गर्भगत मुनिने शुक्रपात होते जाना तो बृहस्पति के शुक्र का मार्ग दोनों पैरों की एड़ियों से रोक दिया ॥ १७ ॥

हम चाहते हैं कि पुराणों और महाभारत आदि ग्रन्थोंसे ऐसे विषय निकाल दिये जावें । शुद्ध पुराण प्रकाशित हों क्या हमारे सनातनीभाई इस पर ध्यान देकर पुराण शोधन कार्यालय खोलकर हमको कृतार्थ करेंगे ?

पं० कालूराम जी आदि को भी चाहिये कि वह आर्यसमाज से वृथा वैर न करके पुराणों का शोधन करें ॥

इस लम्बी भूमिका के पीछे हम पुराणकलङ्काभास पोथी की थोथी कल्पना दिखावेंगे ॥ इति भूमिका समाप्ता छुट्टनलाल स्वामी मेरठ

ओ३म्

पुराण समीक्षा नं० २

पुराणकलङ्काभास का उत्तर

पं० कालूराम शास्त्री अमरौधा जि० कानपुर को आर्यजनता जानती है। वह अब आर्यसमाज के पीछे पड़े हैं पुराना सत्यार्थप्रकाश छपाया है उसे ३) पर बेचते हैं। आर्यधर्म का भी प्रचार कर रहे हैं क्योंकि मूर्त्ति पूजा बालविवाह खण्डन। तिलकछाप,महन्ताई की पोल,वाममार्ग का निराकरण उस से खूब होता है॥

वैदिक वर्णव्यवस्था का प्रकाश पुराणों की अमान्यता पुराना सत्यार्थ-प्रकाश भी पद पद पर दिखा रहा है। इस लिये पं० कालूराम जी को हम धन्यवाद देते हैं। आज पुराण कलंकाभासमार्जन पोथी हमारे सामने है इस का मूल्य।) है हमने वी.पी. मङ्गाकर इस की समीक्षा आरम्भ करदी है। आगे वेदप्रकाश में क्रमशः इस की समीक्षा करेंगे। आशा है पाठक प्रसन्न होंगे॥

इस पोथी के पढ़ने से पुराणों का कलङ्क दूर नहीं हो सक्ता है। हां! पुराणों की परस्पर विरोधपूर्वक देवनिन्दा का पर्दा खुलता है इस के आरम्भ में ही कालूराम जी लिखते हैं॥

कालू० "पाठकवृन्द! पुराणों का व्यासकर्तृत्व, वैदिकत्व तथा गौरवता, आप पूर्व पुस्तक "पुराणसिद्धि" में उत्तम प्रकार से देख चुके। अब इस पुस्तक में परस्पर " देवनिन्दा " आदि आदि पुराणों पर जो झूंठे कलङ्क लगाये जाते हैं उनको देखिये॥

उत्तर—पुराण व्यासकृत नहीं, अवैदिकता और देश काल के विरुद्ध शिक्षा देते हैं यह हमारे बनाये "भागवत परीक्षा" "भागवतविचार" "भागवतसमीक्षा" "नियोगनिर्णय" " पञ्चकन्याचरित्र" एक "कन्या के २१ विवाह" और "पौराणिकवर्णव्यवस्था" से जाने गये हैं। वेदप्रकाश में छपे अनेक लेख सदा ही सिद्ध करते हैं कि पौराणिक पोल अब पेवन्द लगाये से रुक नहीं सक्ती। इस पोथी से परस्पर देवनिन्दा भी सिद्ध हो जायगी॥

कालू०—(समय) के हेर फेर से यह शताब्दी कुछ ऐसी आगई है कि इसमें प्रत्येक मनुष्य अपने को बुद्धिमान् तथा देशोद्धारक समझने लगा है इसी पर समाप्ति नहीं कि केवल अपने आप को बुद्धिमान् ही समझता हो, नहीं नहीं इसके साथ ही साथ दूसरों को बेवकूफ भी समझता है यही कारण है कि आज प्रत्येक पुस्तक और प्रत्येक लेख पर ऐतराज हो रहे हैं॥

उत्तर—यही कारण है कि आप अपने को शास्त्री औरस्वामीदयानन्द जैसे वेदोपदेशक को भूला समझ बैठे हैं॥

कालू०-इस के अलावा एक और भी खूबी मनुष्यों में आगई वह यह कि इनके ऐतराज का ठीक उत्तर भी दे दिया जावे और इन महात्माओं की चाल भी बन्द हो जावे और यह अपने मन में उस उत्तर को ठीक और सत्य भी समझ लें तथापि मानने को तैयार नहीं। इसमें कारण दो ही हैं किसी किसी मनुष्य की तो मन की यह इच्छा हो गई कि संसार के समस्त बन्धन, समस्त धर्मपुस्तकें समस्त रीति खण्डन होकर मनुष्य स्वेच्छाचारी बनें और बाज बाज मनुष्य अपने टकों से गरज रखते हैं आजसंसार का बड़ा भारी भाग इसी बहाव में बह रहा है॥

उत्तर—तभी तो पुराणों की पोलसर्वथाबन्द होने पर भी आप उन के कलंक को कलंकाभास कह कर उसे मार्जन करना चाहते हैं॥

कालू०-यदि मूर्ख या अङ्गरेजी शिक्षित मनुष्य इस बहाव में बह जावें तो कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि इन्होंने कभी स्वप्न में भी धर्म के ऊपर विचार नहीं किया किन्तु शोक उन सज्जनों का है कि—जो संस्कृत पढ़कर भी इस बहाव में बह रहे हैं। मुझे शोक है कि आर्यसमाज के नेता धर्म का उपदेश करने वाले अपने को वैदिक बतलाने वाले पं० तुलसीरामजी भी इसी बहाव में बह गये। मुझे आर्य्यसमाज के शेष उपदेशकों पर जरा भी शोक नहीं! शोक है तो पं० तुलसीराम के बहने का। जोकि अनेक गुणों के स्थान होने के अलावा पण्डित और प्रतिनिधि के सभापति भी हैं॥

उत्तर-शोक करें या स्यापा मनावें पुराणों की पुराणी गूदड़ी पर नाना मतके पैवंदों की पैरवी वृथा है। पं० तुलसीराम के लिखने का विशेष शोक यूंभी है कि अंग्रेज़ी बाबू के पुस्तक में आप १।२ संस्कृत व्याकरणादि की अशुद्धि बताकर लिखदेते कि वह बाबू जी भला पुराणों के महत्व को क्या जाने

संस्कृत पढ़े पहचान सकें हैं। परन्तु पं० तुलसीराम वेदभाष्यकार मनुके अनुवादक ६ दर्शन शास्त्रों के टीका कार सभा के प्रधान के लेख को आप टाल नहीं सक्ते ॥

कालू० आप अपने बनाये भास्कर प्रकाशमें "पुराणों में देवताओं की निन्दा" का मोटे टाइप में हेडिङ्ग देकर दिखलाना चाहते हैं कि——

विष्णुदर्शन मात्रेण शिवद्रोहः प्रजायते। शिवद्रोहान्न संदेहो नरकं यातिदारुणम्।तस्माद्विष्णुनामापिन वक्तव्यंकदाचनर

विष्णु के दर्शनमात्र से शिव का द्रोही होता है, इसमें संदेह नहीं कि शिव के द्रोह से नरक में जाता है। अतएव कभी विष्णु का नाम भी न लेना ॥

यस्तु नारायणं देवं ब्रह्म रुद्रादि दैवतैः।
समं सर्वैर्निरीक्षेत स पाखण्डी भवेत्सदा ॥ ३ ॥
किमत्रबहुनोक्तेन ब्राह्मणा येप्यवैष्णवाः।
न स्प्रष्टव्या न द्रष्टव्या न वक्तव्याः कथंचन ॥४ ॥

जो कहते हैं कि और देवता अर्थात् ब्रह्मा, महादेव आदि नारायण के समान हैं वे पाखण्डी हैं जो विष्णु को नहीं मानते और ब्रह्मा, आदि के पूजक भी हैं। तथापि बोलने देखने और स्पर्श करने के योग्य नहीं ॥

ये ऽन्यं देवं परत्वेन वदन्त्यज्ञान मोहिताः।
नारायणाज्जगन्नाथात्ते वै पाखण्डिनोनराः ॥ ५ ॥

जो लोग किसी दूसरे देवता को नारायण से जो जगत का स्वामी है बड़ा कर के मानते हैं सो अज्ञानी और पाखण्डी हैं ॥

एवदेवो महादेवो विज्ञेयस्तु महेश्वरः।
न तस्मात्परमं किञ्चित्पदं समधि गम्यते ॥६

महादेव को ईश्वर जानना चाहिये और यह मत समझो कि उस से कोई बड़ा है। फिर इससे विरुद्ध देखो ॥

वासुदेवं परित्यज्य येऽन्यं देवमुपासते ।
तृषितो जान्हवीतीरे कूपं खनति दुर्मतिः ॥७॥

अर्थ—विष्णु को छोड़ कर जो दूसरे देव को मानते हैं वह उन मूर्ख के समान हैं कि जो गङ्गा के तीर प्यासा बैठा हुआ कुआ खोदता है ॥

इसके आगे दो श्लोक भागवत के भी दिये हैं।

भवव्रतधरा येच्च येच तान् समनुव्रताः।
पाखण्डिनस्ते भवन्तु सच्छास्त्र परिपंथिनः ८॥
मुमुक्षवो घोर रूपान् हित्वा भूतपतीनथ ।
नारायण कलाः शान्ता भजन्तिह्यनुसूयवः ९॥

अर्थ—जो शिव के भक्त हैं और उनकी सेवा करते हैं सो पाखण्डी और सच्चे शास्त्र के वैरी हैं। इस लिये जो मोक्ष की इच्छा रखते हैं सो भयानक वेष भूतों के स्वामी अर्थात् महादेव को छोड़ें और नारायण की शान्तकलाओं का पूजन करें ॥

पाठकवृन्द! आज कल ऐसे ऐसे श्लोकों को सुन कर साधारण मनुष्य तथा अङ्गरेज़ी शिक्षा की बू से होश वाला होने वाला शिक्षित समुदाय भ्रम में पड़ कर पुराणोंसे नाक सिकोड़ने लगता है और अपने को हिन्दू जाति से बिल्कुल अलहदा समझ कर पुराण मानने वाले लोगों की मसखरी एरचताक़ हो जाता है।केवल मसखरी ही नहीं करता किन्तु बुरे बुरे शब्द कह कर हिन्दू जाति की इज्जत लेने को तैयार हो जाता है। यदि हम इन को दोष दें तो यह भी दोष के भागी नहीं ठहरते क्योंकि इन्हों ने प्रथम तो अङ्गरेज़ी शिक्षा पाई, दूसरे हिन्दूधर्म सुनने में आया तो बुरे के सिवाय यह बात कभी न सुनी कि हिन्दू धर्म में यह बात अच्छी है। जब कि रात दिन हिन्दूधर्म के ग्रन्थों की बुराई सुनने में आवे फिर वह कौन कारण है कि जिस की वजह से हिन्दू ग्रन्थों का चित्त में आदर विश्वास रहे उन को सत्य माना जावे ॥

उत्तर—जब हिन्दू शब्द ही वेद शास्त्रों में नहीं तब धर्म कैसा? उन पुराणों को त्याग दो जिन में बुराई है ॥

कालू०–"इसी के विषय में पूछता हूं कि पं० तुलसीराम जी ने जो यह कलङ्क पुराणों पर लगाया है क्या वह सच है। क्या पुराणों का यही अभिप्राय है कि सब देवताओं की निन्दा करें या सब को दूषित करदें ? पण्डित जी यदि यहां पर जरा भी विचार बुद्धि से काम लेते या न्याय (इन्साफ़) को अपने सन्मुख रखते तो भलीभांति समझ जाते कि संसार में हिन्दूधर्म का कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं कि जिस में किसी की भी निन्दा लिखी हो।"

उत्तर–पं० तुलसीराम जी ने ही पुराणों को कलङ्क नहीं लगाया किन्तु जिस ने भी न्याय (इंसाफ़) को सामने रक्खा उसी ने पुराणों को अच्छा नहीं बताया संस्कृत साहित्य में "सुभाषितरत्नभाण्डागार" नाम का एक पुराना बड़ा प्रसिद्ध पुस्तक है बड़े २ विद्वान् उसको पढ़ते हैं उस में भी पुराणों के विषय में यह लिखा है:—

पौराणिकानां व्यभिचार दोषो–नाशङ्कनीयः कृतिभिः कदाचित् ।
पुराणकर्ता व्यभिचारजात–स्तस्यापिपुत्रो व्यभिचार जातः ॥ १ ॥

अर्थात् पण्डितों को पौराणिकों के व्यभिचारदोष में शंका ही नहीं करनी चाहिये। क्यों कि पुराणों के बनाने वाला और उस का पुत्र भी व्यभिचार से पैदा हुवे हैं। हमारे सनातन धर्मी भाई व्यास जी और उन के सुयोग्य पुत्र शुकदेव मुनि को व्यभिचार से उत्पन्न पुराणों के लेखानुसार मानते हैं। हम श्री वेदव्यास और शुकदेव जी को पवित्र पुरुष मानते हैं और कहते हैं कि यह दोष मिथ्या हैं। किन्हीं ब्राह्मणों के निन्दक नवीन नास्तिक ने व्यासादि पर दोष के श्लोक घड़ दिये हैं ॥

हिन्दू धर्म की पोथी आपने बनाई हैं उन में तो स्वामी दयानन्द जैसे महाविद्वान् की पं० तुलसीराम स्वामी की भर पेट निन्दा लिखी हैं। यदि आप उसे निन्दा ही नहीं समझते तो यह आप की अकल की कल ढीली हो गई है ॥

कालू–" निन्दा करना यह सनातनधर्म का काम नहीं है । इस धर्म का तो छोटे से छोटा ग्रन्थ भी यही सिखलाता है कि " सर्वंखल्विदंब्रह्म" "मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षंताम्" "यथामित्रे तथारिपौ" जब इस धर्म के यह सिद्धान्त हैं तब इसके प्रधानग्रन्थों में देवताओं की निन्दा बतलाना कहां तक सच्चाई रखता है इस का विचार पाठक आप करलें । "

उत्तर–यदि निन्दा करना सनातनधर्म का काम नहीं तो आप स्वामी दयानन्द जी पं० तुलसीराम आदि आर्यविद्वानों की निन्दा करने वाले सनातनधर्मी अपने को मत कहो या सनातन धर्मोपदेशक मत लिखा करो "मित्रस्य चक्षुषा०" मन्त्र तो वैदिक धर्म का स्वामी दयानन्द ने दिखाया है सर्वंखल्विदंब्रह्म० औपनिषद् वाक्य है। इन्हें आप छोटे से ग्रन्थों के प्रमाण कहते हैं यह आप की भारी भूल है । पुराणों का प्रमाण दीजिये वहां तो (गर्वगर्वणं मूढ मधुयावत घ्वाम्यहम्) भरा है । सुरा=मद्यरहितों को असुर बताया है । मद्यपों को देव। पद्मपुराण के ७ श्लोकों का कुछ भी उत्तर न देकर (क्या यह दोष स्वीकार है) पं० कालूराम जी ने आगे ८ । ९ । १० । ११ । १२ पृष्ठों में दक्षयज्ञ की भागवत की कथा लिखकर बताया है कि दक्षने अपने जामाता महादेव और पार्वती का अपमान किया तब दक्षपुत्री ने शरीर त्याग दिया । वीरभद्र ने शिवगण के साथ आकर सब देवतों को (धता बताई) भगादिये तब भृगु जी ने क्रोध में महादेव के दूतों को गालीभी देकर कहा है कि "भवव्रतधरायेच०" जो शिव के भक्त होंगे या जो उन के सेवक होंगे वह पाखण्डी शास्त्र के विरुद्ध होंगे । सारांश यह है कि क्रोधवश शाप दिया है ॥

उत्तर–कुछ भी थेगली लगावें सत्य बात कैसे छिपे । नीचे के प्रश्न होते हैं

१–दक्षप्रजापति यज्ञ करने वाले थे उस में देवता सब ही बुलाये हुवे थे सब का पूजा सत्कार किया था । तब महादेव देवता भी समझे जाते तो उनका न बुलाना मान न करना क्या दाल में काला था ॥

२–जामाता को न बुलाना भी कोई कारण था ॥

३–सब देवता क्या आर्यसमाजी थे या सनातनधर्मी जो रुद्र का अपमान होते हुवे भी दक्ष के ही पक्ष में रहे । यज्ञ के भोजन के भूखे थे कि अन्न दाता की जय मनाते रहे शिवगण से त्रास पाते रहे । दक्षका साथ क्यों नहीं छोड़ा ॥

४—यह तो आप कालूराम जी भी मान गये कि निरपराध देवगण ! को नन्दी वीरभद्र ने सताया था अपराध तो दक्ष का था इस लिये भृगुने महादेव को शाप दिया कि "भवव्रतधरा" यदि कोई पूछे कि अपराध तो नन्दी वीरभद्र का था भृगुने महादेव को शाप क्यों दिया ? दूसरी बात भी विचारणीय है कि महादेव के दूतों ने दक्ष और देवता ओं को फटकारा था देवगुरु बृहस्पतिजी को क्रोध न आकर भृगुजी जो दैत्यों के गुरु थे उन्हों ने क्यों शाप दिया? कहीं दक्ष यज्ञ में सुरापान करने वाले ही दनुज राक्षस मनुज आये थे ॥

५—शिव जैसे ज्ञानी बैठे रहे लड़ाई झगड़ा होता रहा यह समझदार दक्ष प्रजापति के यज्ञ का हाल काशी* के शैव वैष्णवों के मार्गशीर्ष संवत्-१९७३ के शास्त्रार्थ से भी अधिक भङ्कर बात है ॥

४—दक्ष के यज्ञ में रुद्र पूजन नहीं हुआ था इससे यह भी सिद्ध होगया कि उस समय सर्वतोभद्र आदि वेदियों या ग्रहयाग का नाम यज्ञ न था अग्निहोत्र होम आदि करना यज्ञ का मुख्य कर्म था । पौराणिक रीति से गणेशपूजा ग्रहपूजा वा सर्वतोभद्रपूजा यज्ञों में नहीं होती थी । उस समय अब जैसी प्रथा के पण्डित कलश स्थापन में:—

कलशस्यमुखे ब्रह्मा कण्ठे रुद्रसमाश्रितः ।
कुक्षौतु सागराः सर्वे सप्तद्वीपावसुंधरा ॥ १ ॥

इत्यादि पूजा पाठों में श्लोक पढ़कर समस्त भूगोल खगोल देवगण कलशही में बताकर पुजवाते हैं ऐसी प्रथा पूर्व काल में नहीं थी । तब तो जो ऋषि मुनि देवताजन आते थे वह सब शरीर धारी होते थे ।

प्यारे पौराणिक भाई जितनी हिमायत पुराणों की करके कालूरामी पोथियों का प्रचार करेंगे उतनी ही हानि उठावेंगे । कालू० पृ० १२। १३ में लिखा है "इस में पं० तुलसीराम ने एक और भी चालाकी की । वह यह कि इस श्लोक के आगे भागवत के प्रथम स्कन्ध का लगा दिया और दोनो को मिलाकर एक अर्थ कर दिया आपने पिछले श्लोक से निन्दा दिखला कर दूसरे श्लोक का अर्थ करते हुए "इसलिये" इतना शब्द अपनी तरफ से मिला कर दोनों का एक अर्थ कर दिया हैं। क्या इसी का नाम इन्साफ़ है॥

* नोट—काशी में भी रामानुजसंप्रदायाचार्य प्रतिवादि भङ्कर श्री-तोताद्रि महोदय के साथ अभी के मार्गशिर में शिरफुटव्वल झगड़ा शैवों ने किया था जिसका समाचार पत्रों में खूब चर्चा हैं ॥

कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा । भानमती ने कुनवा जोड़ा ॥

टाट की अङ्गिया मूंज की तनी कहो मेरे बलमा कैसे बनी ॥

एक श्लोक चतुर्थ स्कन्ध का और दूसरा प्रथम स्कन्ध का है । इत्यादि ॥

उत्तर–प्रथमस्कन्ध और चतुर्थ स्कन्ध सभी में देवनिन्दा है । यदि इन के अर्थ में उलट फेर हो तो बताइये । एकजज किसी दोषी को सजा देते हुवे ताजीरातहिन्द की दफ़ा ४०८ का दोषी जानता है साथ ही वही दोषी १०३ का भी अपराधी हो तो क्या कोई वकील यह कहेगा कि ४०८ के पीछे १०३ दफ़ा क्यों लगाई । दोनों की सफ़ाई दीजिये । व्यर्थ की कहावतों की तनी टांककर टाट का ओढ़ना ओढ़कर पुराणों पर पर्दा न डालिये ॥

कालू० पृ० १२ से १६ तक श्लोक २ । ३ । ४ । ६ । ७ । ८ । ९ का विचार करने की प्रतिज्ञा करके मनुष्यों में लालन पालन प्रकृति का भेद बताकर ईश्वर में भी भेद बता दिये हैं । प्रकृतिभेद से उपासना भेद का राग है । पृ० १७ में ब्रह्मारुद्र विष्णु सब एक ही ईश्वर के नाम स्वीकार किये हैं ।

यथा–इस में (१) प्रमाण यह है कि वेद यह कहरहा है कि "सब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रः स शिवः" अर्थात् वही ईश्वर ब्रह्मा है और वही विष्णु और वही रुद्र वही शिव है । बस अब पुराण इस के विरुद्ध कभी न कहेंगे क्योंकि जिस विषय को वेद वर्णन करता है पुराण भी विस्तार रूप से उसी विषय को वर्णन करते हैं ॥

उत्तर–जब एक ही ईश्वर के नाम हैं तो लड़ाई कैसी वेदों में सब एक ही ईश्वर के नाम हैं सो तो हम भी मानते ही हैं । परन्तु दक्ष के यज्ञ में ब्रह्मा विष्णु की पूजा हुई रुद्र की नहीं हुई यह भेद कैसा । बस जिस रुद्र ने क्रोध किया था वह भी क्या ब्रह्मा विष्णु ही थे ? यही झगड़ा है अन्य कुछ भी नहीं

कालू० "वेद ने अवतार, मूर्त्तिपूजा, श्राद्ध, तीर्थ महत्व आदि जिन विषयों का वर्णन किया उन के विरुद्ध पुराणों की लेखनी नहीं चली, किन्तु उन्हीं की पुष्टि पर ही पुराणों का विस्तार हुआ है ॥

उत्तर–वेद में मत्स्यकूर्म बराह नृसिंह वामन राम कृष्ण बुद्ध कल्की इन १० अवतारोंकायार२४ अवतारों का कहां विचार है । कोई बतावे । वेदों मेंमूर्त्तिपूजा के शालिग्राम शिलावादि कहीं है ही नहीं । नर्मदेश्वर का पता नहीं । रामकृष्ण का नाम नहीं इन ही की मूर्त्ति पूजी जाती हैं । इस लिये कालूरामी दावा मिथ्या है ॥

कालू०—इन लोगों को यह भी तो सोचना चाहिये कि द्वितीय श्लोक जिस में विष्णु की निन्दा है यह पद्मपुराण का है और तृतीय चतुर्थ पञ्चम श्लोक कि जिन में विष्णु की स्तुति है यह भी पद्मपुराण के हैं। यदि पद्मपुराण में तुलसीराम के लेखानुसार विष्णु की निन्दा ही मान ली जावे तो फिर इन विष्णु की स्तुति के श्लोकों की संगति कैसे लगेगी पं० तुलसीराम जी तो क्या समस्त समाजी इकट्ठे होने पर बारह वर्ष में भी सङ्गति न बैठा सकेंगे। संगति का न बैठना या संगति को बिगाड़ देना यह दूसरा दोष है॥

उत्तर—श्री पं० तुलसीराम का और हमारा दावा है कि पुराण एक के बनाये नहीं उस में कहीं निन्दा कहीं स्तुति सभी कुछ है। बाजीगर का खेला है सङ्गति लगाना तो सनातनधर्म नामधारी लोगों का काम है। हमतो यही मानते यही लिखते हैं कि पुराण न एक के बनाये न एक समय के बनाये हैं। आज कल जैसे समाचार पत्रों में कभी किसी की निन्दा कभी किसी की स्तुति लिखी जाती है ऐसे ही पुराणों ने भी गाया है।

अबके समाचारों को फायल १०० । २०० वर्ष पीछे जब लोग पढ़ेंगे स्वामी दयानन्द को मूर्त्ति पूजा और अवतार का निषेध करने वाला भी कहेंगे और कोई सनातनी दयानन्द जी को मूर्त्तिपूजादि समर्थकभी लिखा पावेंगे. इसी प्रकार पुराण भी बनते रहे हैं॥

(४) कालू०—यदि आप सच पूछते हैं तो पुराणों में शैव तो वैष्णव हैं और वैष्णव शैव हैं इस को आप इस प्रकार समझ सकते हैं। वैष्णव का इष्ट देव कौन है, प्रभु भगवान् रामचन्द्र अथवा जगदीश्वर श्रीकृष्णचन्द्र। अच्छा देखना चाहिये कि भगवान् रामचन्द्र जी तथा श्रीकृष्णचन्द्र जी ये किसके उपासक, महादेव के, अब महादेव वैष्णव का इष्टदेव का उपास्य है तब तो वैष्णवों का पहिले हो चुका। जब कि इन के इष्टदेव शिव हैं तब इन के शैव होने में शंका ही क्या है॥

उत्तर—जब रामकृष्ण को आप साक्षात ईश्वर मानते हैं तो वह उपासना क्यों किसी की करते थे। और महादेव के इष्टदेव रामचन्द्र कहां हैं ? कृष्ण ने शिवपूजा कहां की है ? कुछ पता नहीं। जब महादेव भी उपास्यदेव;

और आप ने ही पृष्ठ ८२ के नीचे की ५ पंक्तियों में यह श्लोक भागवत का लिखा है:—

"तमधर्मे कृतमतिं विलोक्य पितरंसुताः।मरीचिमुख्यामुनयो।"

इस में मरीचि आदि मुनियों ने पिता (ब्रह्मा) को (अधर्मे कृतमतिं-विलोक्य) अधर्म में की है मति जिस ने ऐसे जानकर समझाया" ॥

अब ऊपर के श्लोक में सीधे शब्दों में ब्रह्मा को अधर्म में मति वाला बतलाया तब आप पुराणों के कलङ्क पङ्कका मार्जन कैसे कर सकते हैं? कृपा कर आप किसी संहिता के वेद मन्त्र में बतलाइये कि ऐसी बुरी कथा कहां है? पुराणों को कीच आप वेदों पर क्यों फेंकते हैं? अपने पुराणों के पङ्क रूप कलङ्क को दूर कीजिये। कोई चोर किसी जन को चोर बताने से अपराध से मुक्त नहीं हो सकता आप वेदका नाम। वृथा ही लेते हैं। वेद हमारे और आप के दोनों के मान्य हैं। वेदों को कलङ्कित करना वेदों में कालिमा बताना कालूराम जैसों का ही काम है॥

कालू०—अब कोई २ समाजी यह भी कहने लगे हैं कि वेद पर तो कलंक नहीं आता क्योंकि "ब्रह्मा" का अर्थ मन और "सरस्वती" का अर्थ वाणी है अतएव स्वामी दयानन्द जी ने यह अर्थ किया है कि यह मन अपनी पुत्री वाणी पर मोहित होकर इस के पीछे २ भागा जब कि वेद में कोई मनुष्य ब्रह्मा है ही नहीं केवल मन का ही नाम ब्रह्मा है और उसका ही वाणी के पीछे २ भागना है तब तो यहां व्यभिचार का दोष नहीं रहा, हां अलबत्ते यह अवश्य मानना होगा कि पुराणों पर व्यभिचार का कलङ्क है क्योंकि पुराणों में ब्रह्मा ईश्वर का अवतार होकर अपनी पुत्री सरस्वती के पीछे २ भागता फिरा। मित्रवर! स्वामी दयानन्दजी तो किसी ग्रन्थ को भी न मानकर मनमानी लिख दिया करते थे॥

उत्तर—मालूम होता है आपने स्वामी दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ पढ़े नहीं अन्यथा ऐसा अनर्गल आप न लिखते कृपा कर बताइये कि किस ग्रन्थ में और किस पृष्ठ पर यह लेख है॥

कालू०—ब्रह्माके ही ऊपरदेखिये "ब्रह्मातृप्यताम्" इस तर्पणके ऊपर स्वामी दयानन्द ने ब्रह्मा नाम उस पुरुष का लिखा जो चारों वेद पढ़ा हो और प्रथम समुल्लास सत्यार्थप्रकाश में दयानन्द ने ब्रह्मा नाम ईश्वर का लिखा, अब यहां स्वामी दयानन्द ब्रह्मा नाम मन का लिखता है उसी ब्रह्मा को

अर्थ पं० शिवशङ्कर समाजी सूर्य करता है, अब कोई समाजी यदि ब्रह्मा का अर्थ "ऊखबलाता ऊँट" कर बैठेगा। इस मन गढ़न्त अर्थों से काम नहीं चलेगा ये भाँति २ के अर्थ तो मूर्ख समाजियों के समझाने के लिये ही रहने दो यहां पर तो ठीक पता लगाना होगा कि ब्रह्मा कहते किसको हैं। ब्रह्मा नाम ईश्वर के साकार रूप का है "योदेवेभ्यः" इस मन्त्र पर उव्वट महीधर, दयानन्द, शङ्कर, मनु आदि २ सभी भाष्यकारों ने ईश्वर के साकार रूप को ब्रह्मा माना है॥

उत्तर–ब्रह्मा नाम चार वेदपढ़ैया शास्त्र सम्मत है और पुराण भी मानते हैं। फिर इस में स्वामी दयानन्द ने क्या धूर मिलादी? ईश्वर का नाम भी ब्रह्मा है। जैसे कि आप भी मानते हैं सोई स्वामी दयानन्द ने प्रथमसमुल्लास में लिखा है। पं० शिवशङ्कर काव्यतीर्थ जी ने प्रजापति का अर्थ सूर्य किया है सो भी शास्त्र सम्मत है। ब्रह्मा का अर्थ ऊखबलाता ऊंट आप जैसों ही को सूझता है तभी तो जो सब को बनाने वाला ब्रह्मा है ऐसा कहते २ भी कुथा में गांठ देकर ब्रह्मा बनाकर बैठा देना पौराणिकों की ही हिम्मत है जो किसी भी प्रामाणिक ग्रन्थ में कहीं भी नहीं मिलता, कुथलय ब्रह्मा पुराणों तक में भी नहीं मिलता। आपने वेद भाष्यकारों में उव्वट महीधर, दयानन्द के नाम के साथ शंकर और मनु को भी भाष्यकारों में गिन दिया है यह पं० कालूराम जी की महाभूल है। मनु और शङ्कर को भाष्यकार बताना आप की अज्ञानता है। हम मासाहारादि मनु जी और शंकराचार्य को महापुरुष मानते हैं और महीधरादि से बहुत घृणा करते हैं ??? मानते हैं। परन्तु फिर भी मनु को वेद भाष्यकार किसी ने नहीं माना इस लिये आप की भूल अवश्य है॥

पं० कालूराम जी पृ० २९ में लिखते हैं॥

(१) वेद में ब्रह्मा नाम ईश्वर के आदि अवतार का है॥

(२) ब्रह्मा नाम मन का नहीं॥

उत्तर–कोई वेद मन्त्र प्रमाण नहीं दिया और पुराणों के बिलकुल प्रतिकूल है। भागवत में आद्यावतार वराह तथा अन्यत्र भी "मत्स्यं कूर्मवराहं च नारसिंह मथापरम्। इत्यादि १० अवतारों में ब्रह्मा को अवतार नहीं बताया॥

(२) ब्रह्मा नाम मन का कहीं नहीं हम भी नहीं कहते॥

३–अङ्क पर कालूराम जी जलरूप ब्रह्मा का जाणी पर आसक्त होने को अतिव्याप्ति दोष बताते हैं॥

४–ये दोष अद्भुत हैं उस में इतने दोष दिखाये हैं। इन कालूरामी लेख को ही छापते हैं॥

कालू०–(४) यदि ब्रह्मा सरस्वती का रूपक बना लेंगे तो फिर सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई इसका भी कुछ पता न लगेगा, फिर आजकल के समाजियों को भी दयानन्द की भांति आसमान से वह क्यों माननी होगी कि जिस में अगाध पानी के मनुष्य नारी गधा गधी घोड़ा घोड़ी आदि २ जोड़े टपकें। इस प्रकार की अनोखी असम्भव दयानन्दोद्भूत सृष्टि माननी पड़ेगी और वेद ब्राह्मण उपनिषद्, मनु, पुराण आदि की कही सृष्टि का क्रम ही बिगड़ जावेगा जैसे सत्यार्थप्रकाश में दयानन्द ने बिगाड़ दिया, सृष्टि क्रम का बिगाड़ना चतुर्थ दोष इन चार दोषों के आने से ब्रह्मा का अर्थ मन करना उतना असम्भव है जितना कि गधे शब्द का अर्थ सत्यार्थप्रकाश।

ब्रह्मा का अर्थ मन त्रिकाल में भी नहीं हो सकता और यदि किसी समाजी में दम है तो दे प्रमाण कहां लिखा है ब्रह्मा का अर्थ मन न होने से दयानन्द का अर्थ गप्प हो गया और वेद में ब्रह्मा नाम ईश्वरावतार का ही रहा, अतएव सरस्वती के पीछे ब्रह्मा को जो समाज ने व्यभिचार का दोष पुराणों पर लगाया था वह वेद में रह गया। अब किसी समाजी की ताब नहीं है कि चूं करें क्या डूब रही जो दूसरे के लिये गढ़ा खोदेगा उसको कुवां तैयार है। समाजियों ने सोचा था कि इस कथा से संसार को पुराणों से घृणा करा देंगे पुराणों से तो घृणा न करा सके किन्तु वेद में कलङ्क लगा कर उस से घृणा करा दई। वाह! वाह! वाह! यही समाजियों के विचार हैं। यही बुद्धि है "चौबे गये थे छब्बे होने दुबे होकर आये" अपने मान्य पुस्तक वेद पर ही पानी फेर दिया। अब समाजों का वह मुंह नहीं रहा जो कि समाज इस पर दो दो बातें करें या शिर को ज़रा भी ऊपर को उठा सके। वास्तविक * में यह है कि समाज एक मूर्ख समुदाय है इसको वेद शास्त्र आदि का कुछ ज्ञान नहीं जो इनके मन में आता है यह वही लिखती पढ़ती * है और स्वामी दयानन्द इस समाज के लाल बुझक्कड़ थे। भला शास्त्रों से अनभिज्ञ समाज में विचार आदि की शक्ति कहां ? यदि किसी समाजी में हो तो इस विषय को शास्त्रार्थ में दिखलावें यदि कोई समाजी शास्त्रार्थ में वेद से कलङ्क उड़ा कर पुराणों पर लगा दे तो मैं उसको १००) पारितोषिक देने को तैयार हूं। समाज जब तक जीवित है इस विषय पर न लेख लि-

लेंगी न इसकी बात चलावेगी यह तो "मौनं सर्वार्थ साधकम्" कर बैठी रहेगी अतएव समाजियों का कलङ्क वेद में ही रह गया।

उत्तर—पाठक! पढ़ चुके पं० कालूरामजी कलङ्क! कैसी सभ्य भाषा में है समस्त पुस्तक के लेख को पढ़ जाइये पुराणों पर से कलङ्क दूर नहीं किया किन्तु वेद को बदनाम करने को कमर कसे खड़े हैं। धन्य है! वेद तो पुराणों के दादा हैं और आपके भी मान्य हैं फिर वेदों पर कलङ्क रहना आप को हर्षप्रद क्यों है। उस वेदों के कुएं में आप और आर्यसमाजी दोनों गिरेंगे। १००) इनाम तो आप देंगे जब कि जो आपके दादा वेदों पर से आपका लगाया कलङ्क दूर कर देगा। ठीक है सुपुत्रों का यही काम है कि अपने दादा के दोषों को पूर्ण करने वाले को कड़े पहनावें॥

लो सुनिये! कान खोल कर सुनिये शास्त्रार्थ की आवश्यकता नहीं है आप ने अभी तक भी चारों वेदों की संहिता में ब्रह्मा को पुत्री गमन का दोष नहीं दिखाया है। १ मन्त्र भी नहीं लिखा "आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास" की कहावत करदी। वेद २ कहते लिखते २ प्रमाण दिया ऐतरेय ब्राह्मण का। कोई बुद्धि रखने वाला पुरुष आपके इन काले अक्षरों की कालिमा को देख कर क्या कहेगा॥

सृष्टि की उत्पत्ति स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद सम्मत बताई है वेद में बहुत से घोड़े गाय मनुष्यादि एक साथ सर्गारम्भ में उत्पन्न हुवे यही उत्तम सिद्धान्त है। परन्तु पुराणों में ब्रह्मा की नाक से शूकर का बच्चा पैदा होना लिखा है। क्या इन शूकरी कूकरी कहानियों को आप वेद से सिद्ध कर सके हैं। आप सात जन्म क्या हज़ार जन्मों में भी वेदों से शूकर के बच्चे की बातें नहीं सिद्ध कर सके हैं॥

पुराणों के कलङ्क को दूर कीजिये वेद को आप बख्श दीजिये। आप के समस्त लेख से भी यह सिद्ध होता है कि ब्रह्मा पुत्री के पीछे दौड़े और इस कर्मको मरीच्यादि ने पाप या बुरा बताया। बस यह कलङ्क दूर नहीं हुवा समस्त लेख व्यर्थ है॥

हम बहुत प्रसन्न होंगे जब पुराणों से कलङ्क दूर होगा हमारा पुराणों से कोई भी वैर नहीं है। पुराणों से इतिहास उत्तम २ लिये भी गये हैं। स्वामी दयानन्द स० जी ने पुराणों ही के आधार पर विश्वामित्र शुकदेव

आदि की कथा लिखी हैं। परन्तु साथ ही शुद्ध भाव से पुराणों में देवनिन्दा को उचित नहीं समझते हैं ॥

कालूराम जी पृ० ३२।३३ में मुसल्मानों के लिये यह उत्तर देते हैं कि उनके आदम ने भी हव्वा को बनाया था तब उस से औलाद पैदा की इस लिये ब्रह्मा पर पुत्री गमन का दोष उन्हे नहीं बताना चाहिये परन्तु कालूराम जी की कालीकमली से यह वर्षा दूर नहीं हो सकी। न तो आदम के बेटों ने आदम को पापी बताया जैसे ब्रह्मा के पुत्रों ने ब्रह्मा को अनुचित कार्य कर्ता बताया पुराण बताते हैं। और नहीं हव्वा से पूर्व कोई सन्तान ही आदम के हुई थी। तीसरे हम आर्य तो यवन मत में भी इस दोषको उन की कमज़ोरी ही कहते हैं, पुराणी कुरानी एकसे रहे॥

फिर कालूराम जी कहते हैं कि यदि कोई माली नारङ्गी को पैदा करे तो वह उस की पुत्री नहीं होती कुम्हार घड़ा बनाता है उस का घड़ा पुत्र नहीं होता शरीर से जूं पैदा होती हैं वह मनुष्य की पुत्री नहीं होती ऐसे ही ब्रह्मा की सरस्वती को पुत्री नहीं कह सके॥

यदि यह बात नहीं थी सरस्वती ब्रह्मा की पुत्री नहीं थी तो आपके समस्त प्रमाण ही धूलि में मिल गये। ऐतरेय में "प्रजापतिर्वैस्वांदुहितरं" इत्यादि की क्या गति रही? सब रह गयी। कृपानिधान! इन व्यर्थ बातों से काम नहीं चलेगा। इस प्रकार ब्रह्मा की बात समाप्त हुई॥

आगे विष्णु का वर्णन होगा (जो वेदप्रकाश में फिर लिखेंगे)

पुराण परिचय का पूर्वार्ध समाप्त हुवा॥

ह०-तुलसीराम सम्पादक १०।४।१६-मेरठ

पं० छुट्टनलालस्वामीकृत पुस्तकें

१ बालरघुवंश ।)
२ पारस्करगृह्यसूत्र भाषा भाष्य ॥)
३ भीमप्रश्नोत्तरी पं०भीमसेनशर्मा
के १९० प्रश्नोंकाउत्तर ॥)
४ तत्तिरीय उपनिषद् भाष्य ≡)
५ ऐतरेय उपनिषद्भाष्य, =)
६ ऋग्वेद भाष्य नमूना ।)
७ चाणक्यनितीसार -)
८ भर्तृहरि नीतिशतक =)
९ प्रश्नोत्तर रत्नमाला -)
१० नियोग निर्णय =)
११ विवाह वयोविचार -)
१२ श्रीदयानन्द जीवन परित्रवचित्र१)
१३ पं०भीमदत्त जीका जीवनच० -)
पं०तुलसीरामस्वामीकाजीवनचरित्र=
१५ वेद चतुष्टय विचार)।
१६ वनिता बुद्धिप्रकाश ≡)
१७ मोहनी मन्त्र)॥
११८ अक्षर प्रदीप)।
१९ नारी अक्षर प्रदीप)।
२० नागरी रीडर नं० १)॥
२१ नागरी रीडर नं० २ -)
२२ नागरी रीडर नं० ३ -)॥
२३ नागरी रीडर नं०४ =)
२४ नागरी रीडर नं०५ =)
२५ वैदिक विज्ञान -)
२६ गङ्गाकी पुकार)।
२७ नागरी कातांश =)
२८ पौराणिक वर्ण व्यवस्था ।)
२९ वाल्मीकि रामायण सार -)
३० मूर्त्तिमीमांसा =)
३१ पञ्चकन्या चरित्र)॥
३२ एक कन्याके २१ विवाह)।
३३ बालविवाह नाटक -)
३४ भागवत परीक्षा)॥
३५ भागवत समीक्षा ।)
३६ भागवत विचार -)
३७ गंगा का मेला -)
३८ आर्य समाज ने क्या किया -)
३९ राज भक्ति प्रकाश -)
४० आर्यावर्त्त का संक्षिप्तइतिहास≡)
४१ नारदयात्रा)॥
४२ विष्णुस्मृति =)

पं०-छुट्टनलाल स्वामी-स्वामी, प्रेस मेरठ